Yayawari
via bhojpuri

NotNul

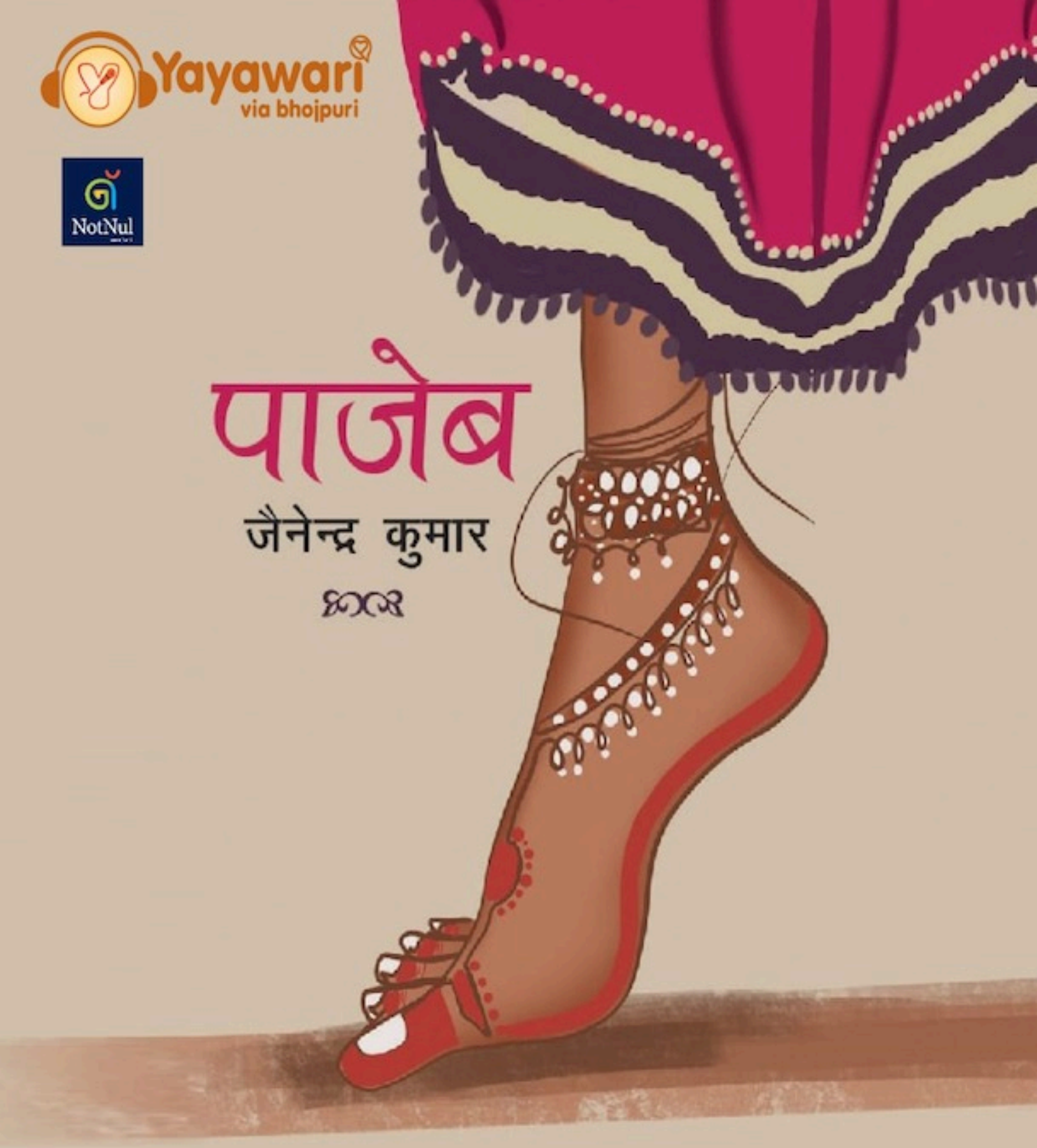

पाजेब

जैनेन्द्र कुमार

अनुवादक
सुधीर मिश्रा

§

आवाज
अंकिता पंडित

पाजेब

कहानी

लेखक –जैनेन्द्र कुमार

अनुवादक – सुधीर कुमार मिश्र

ईश्वर बृज'' फ़ाउंडेशन के तहत माटी परियोजना के अंतर्गत अनूदित

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: नवम्बर, 2022

बाजार में एगो नयका तरह के पाजेब आईल बा । पैरन में पहिनला के बाद बहुत सुंदर दिख़त बा पैर। ओकर जवन लाछा बा उ एगो अग्ज्ब्बे लचक के साथे जुटल बा एक दूसरा से एह से उ ऐसन बुझला जैसे की पाजेब भा ओकरा के छाय्ल कह ली ओकर कवनो आपन रूप नईखे ,कवनो आकार नईखे , जवना गोड़ में परल बस उ ओही गोड़ खतिर सुंदर बन जात बा ।

अगल-बगल के छोट- बड़ जेकरा देखब रावा उहे छायगल सबका गोड़ में मिली ।एगो गोड़ में पडल नाही की दुसर तीसर गोड़ के उ शान बन जाला ।अब देखा देखि के एह दौर में ओकरा के ना पहिनल बड़ा मुश्किल हो गईल बा ।

हमरो बुचिया कहलस की बाबूजी , हमहूँ पाजेब पहिनब । बतायीं भला अभी क दिन के भइबे कईल ढेर-से ढेर चार बरिश के आ पहिनिहें का त “पाजेब!”

हम पूछनी , कइसन पाजेब ?

बोलल , ओइसने जइसन रुक्मण पहिरेली , जइसन शीला पहिरेली ।

हम कहनी , अछा ठीक बा- ठीक बा ।

बोलल ,हम त एही बेरा मंगा लेब ।

हम कहनी , अछा भाई ठीक बा, एही बेर मंगा लिह अऊँजा मत ।